आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत

आजीविका सृजन हेतु जैविक खाद निर्माण पर संगोष्ठी/प्रशिक्षण

स्थान : उकड़ीमारी, तोरपा, खूंटी

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

दिनांक : 29.04.2022

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक, डा. नितिन कुलकर्णी के मार्गदर्शन में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत संस्थान के एक दल द्वारा दिनांक 29.04.2022 को खूंटी जिला के तोरपा प्रखंड अंतर्गत उकड़ीमारी ग्राम में "आजीविका सृजन हेतु जैविक खाद निर्माण" विषय पर एक संगोष्ठी/प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता ग्राम के पंचायत मुखिया ने किया। आयोजित कार्यक्रम में जनप्रतिनिधि सहित 48 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए संस्थान के श्री बी.डी.पंडित ने प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम के महत्व को बताया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में पंचायत मुखिया श्री एतवा भगत ने संस्थान के प्रयासों की सराहना की एवं प्रतिभागियों से अधिकतम लाभ लेनें की अपील की।

वार्ड सदस्य श्रीमती चम्पा देवी, पूर्व ग्रामसभा अध्यक्ष श्री भीखा साव, वर्तमान ग्राम सभा अध्यक्ष श्री अजित गोप, प्रेरक दीदी श्रीमती देवमंती देवी ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। श्री तुलसी कुमार, प्रखंड स्तरीय प्रेरक (Block Level Mentor), दीनदयाल उपाध्याय ग्राम स्वावलंबन योजना (DDUGSY) ने भी सभा को संबोधित किया।

श्री निसार आलम,मु.त.अ. ने जैविक खाद एवं रासायनिक खाद का तुलनात्मक विवरण बताते हुए जैविक खाद की विशेषता को बताया। श्री सूरज कुमार, व.त.स. ने बताया कि सबसे पहले हमे जैविक खाद का उपयोग खुद करना होगा एवं उसकी गुणवत्ता मजबूत करनी होगी। जैविक खाद का विस्तृत बाजार है जिसकी मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। रासायनिक खाद का एकमात्र विकल्प जैविक खाद है। श्री सुभाष चंद्र, वैज्ञानिक-डी, ने जैविक खाद निर्माण की पूर्ण प्रक्रिया को बताया। बेड बनाना, कचड़ा डालना, कच्ची गोबर डालना तथा केचुआ डालना आदि को विस्तार से बताया।

अधिक उत्पादन के लिए *ईसीनिया फोटिडा* एवं *यूडिलस यूजनी* नामक केचुआ को उपयुक्त बताया। जैविक खाद निर्माण मे आने वाली समस्याओं का समाधान भी बताया।

श्री बी.डी.पंडित, त.अ. ने जैविक खाद निर्माण के लिए आवश्यक संसाधन को बताते हुए कहा कि आजकल बाजार में सस्ता एवं मनचाहे माप में पौलीकार्प के बेड उपलब्ध है, लेकिन स्थायी एवं व्यावसायिक तौर पर खाद निर्माण के लिए स्थायी बेड का निर्माण लाभदायक होता है, जिसमे वर्मीवास आदि एकत्र करने की सुविधा होती है। किसानों को प्रोत्साहित करते हुए श्री पंडित ने कहा कि मनरेगा से मिल रही मदद का फायदा ले, हमारी संस्थान आवश्यक तकनीकी सहयोग देगा।

प्रेरक दीदी ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)